बदलता परिवेश साहित्य और मीडिया

मिराण्डा हाउस, हिन्दी विभाग

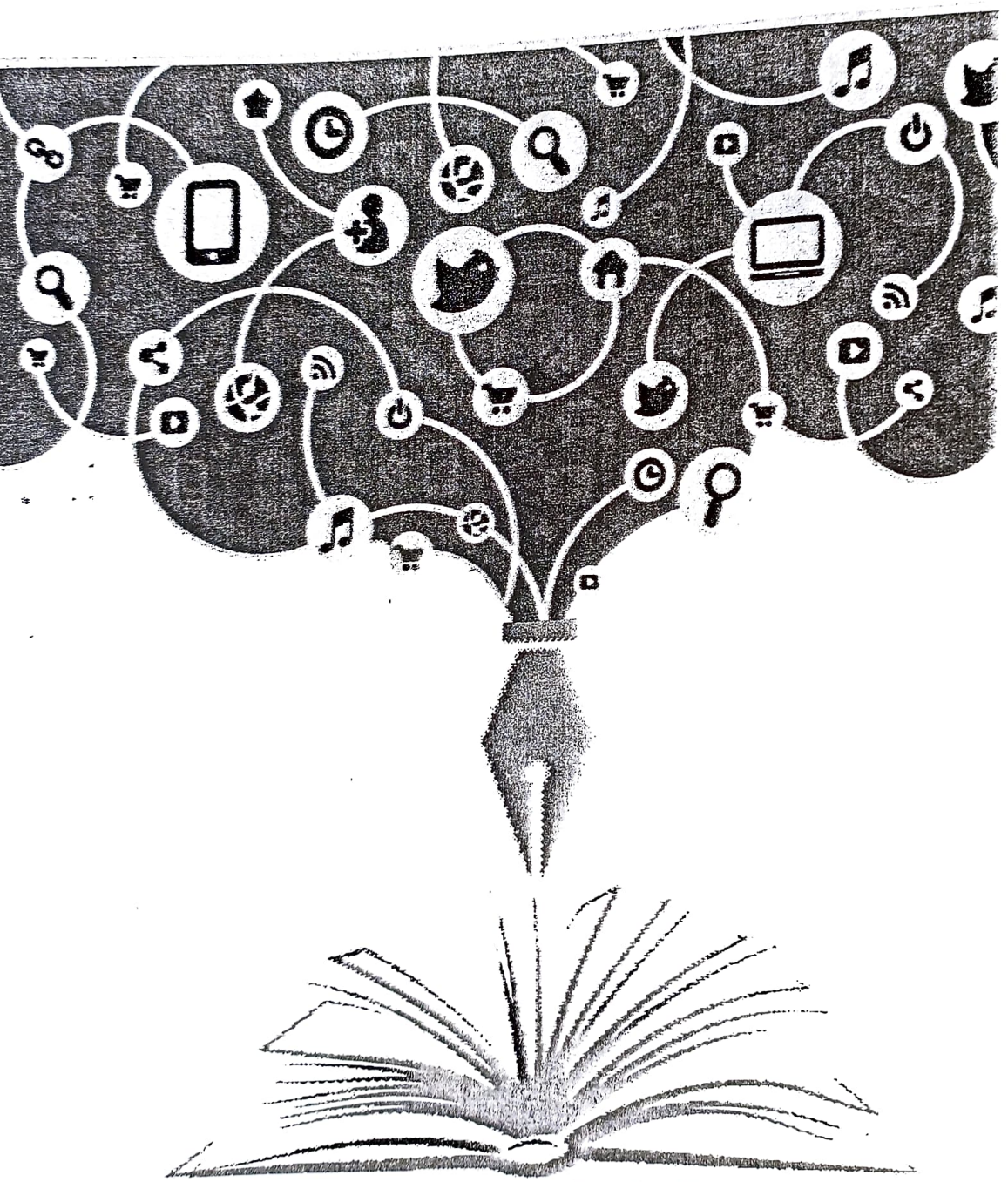

विदेश शाखा
घोराही उप महानगरपालिका-15, नया रतनपुर,
गोपाल चौक, दाङ, नेपाल (पिन : 22415)
फोन : 9857826417, 9815465315

शाखा
अनंग प्रकाशन / ठा. गजराज सिंह, भगतपुर,
पोस्ट - भगतपुर, जिला- अलीगढ़ 203132

अनंग प्रकाशन
फोन नं. 09350563707

सर्वाधिकार : संपादक
प्रथम संस्करण : 2019
मूल्य : 595 रुपये
ई-मेल : anangprakashan@gmail.com
ISBN : 978-93-80845-50-0

अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053, शब्द-संयोजन : सिद्ध-भभूति ग्राफिक्स, दिल्ली-110053, मुद्रक : राजोरिया प्रिन्टर्स, दिल्ली-32 से मुद्रित।

बिक्रम सिंह की कहानियों में उत्तर आधुनिक संदर्भ और दलित विमर्श 117
— डॉ. संगीता वर्मा
दलित जीवन का यथार्थ और भूमि समस्या 131
— अतुल कुमार
दलित स्त्री विमर्श : अवधारणा और आवश्यकता 136
— डॉ. सुषमा कुमारी
समकालीन हिंदी ग़ज़ल में दलित अस्मिता 141
— जुगुल किशोर चौधरी
स्त्री के स्वप्न, संसार और यातना : रंजना जायसवाल की कविताएँ 156
— डॉ. नीतू परिहार
संस्कृत साहित्य में स्त्री छवि 165
— विवेक मिश्रा
शिक्षा, मुसलमान औरतें और उनके लेखन का अध्ययन 176
— रिजवाना फातिमा
'कितने पाकिस्तान' में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना 188
— फरीदा खातुन
मोहन राकेश की कहानियाँ : परम्परा एवं आधुनिकता 193
— साहिद
शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में ग्रामीण जीवन 200
— डॉ. स्नेह लता नेगी
फाँस : किसान जीवन का दस्तावेज 206
— अभिषेक दांगी
हिंदी साहित्य में किन्नर समाज 212
— पूनम सिंह
लघु कथा : बहुआयामी जीवन का विस्तार 217
— डॉ. सुनीता सक्सैना
आदिवासी साहित्य में स्त्री-अस्मिता का विमर्श 224
— दीप्ति

स्त्री के स्वप्न, संसार और यातना : रंजना जायसवाल की कविताएँ

डॉ. नीतू परिहार

कविता कहना और कविता में अपनी मन की बात कहना, अपने सुख-दुख कहना खुद को हल्का कर देते हैं। पिछले कुछ समय से बहुत सी लेखिकाओं ने कविता लेखन में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्शायी है। ये वे लेखिकाएँ हैं जो अपने जीवन की सहेजे हुई यादों को, देखे हुए दृश्यों को और बीताये हुए पलों को कविता में कहती हैं। इनके विषय भी इनके सपनों से असीमित हैं। ये चाँद पर भी कहती हैं तो मजदूर स्त्री की बात भी करती हैं। ये स्त्री विमर्श पर भी बात करती हैं तो फेसबुक और मेट्रो ट्रेन भी इनकी कविताओं के विषय होते हैं। इस आलेख में रंजना जायसवाल की कविताओं पर चर्चा की गयी है। रंजना समकालीन हिंदी कविता का जाना-पहचाना नाम है। वे भाषा-संयम और परिष्कृत रचाव में स्त्री मन के संशय, दुख, पीड़ा और प्रेम की गहनतर अनुभूति के साथ समाज की खुरदरी सच्चाइयों को अपनी कविता में बयां करती हैं। रंजना की कविताएँ समाज की विडम्बना और विद्रूपता पर तीव्र आक्रोश है तो साथ ही गाँव-कस्बों की सच्चाइयों को साफगोई से प्रस्तुत करती हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति ने स्त्रियों को बहुत भ्रमित किया है। सदियों से गोरे रंग की चाह भारतीय संस्कृति में देखी गई है। सभी सुंदरता का पैमाना रंग को मानते हैं। यही कारण है कि सभी गोरा दिखाना चाहते हैं। इसी चाह को इस कमजोरी को सौंदर्य प्रसाधन बनाने वाली कंपनियों ने बहुत अच्छे से समझ लिया है। वे गोरा करने की क्रीम बनाने का दावा करते हैं। इसी दावे के झाँसे में आकर कजरी क्रीम लगाती है पर क्रीम-

चार दिन में ही खतम हो जाता है
यह गोरेपन की क्रीम